International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(II), January - March, 2023, pp. 58-60

किशोरावस्था के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सोशल मीडिया से पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ. ममता शर्मा*

सार

सोशल मीडिया इंटरनेट के माध्यम से विभिन्न सोशल मीडिया अनुप्रयोगों से जुडे लागो के बीच विभिन्न प्रकार या सुचनाओं के प्रारूप का आदान–प्रदान करने का एक साधन है। इंटरनेंट सम्प्रेषण तथा प्रसारण का एक प्रमुख शक्तिशाली जन–साधन के रूप में विकसित हो रहा है। इसे आभासी समुदाय कहा जाता है। वे विश्व स्तर पर जुड़े हुए रहते है, दूरस्थ क्षेत्र में रहने वाले लोग मेट्रो शहरों और विदेशो के बारे मे जान सकते है। सोशल मीडिया के अधिक सम्पर्क मे रहने से उनके नैतिक मूल्यों पर भी इसका असर देखा जा सकता है। प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का मुख्य लक्ष्य किशोरावस्था के विद्यार्थियो के नैतिक मूल्यों पर सोशल मीडिया से पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था। शोध के अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है तथा यादृच्छिक विधि द्वारा सरकारी व निजी विद्यालयों के 60 विद्यार्थियों का चमन किया गया। शोध का निष्कर्ष यह निकला की सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सोशल मीडिया का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

शब्दकोशः *सोशल मीडिया, इंटरनेंट सम्प्रेषण, सर्वेक्षण विधि, शिक्षा, साहित्य।*

प्रस्तावना

आधुनिक समय में सोशल मीडिया ने पूरी दुनिया को समेटकर एक परिवार का रूप दे दिया है। शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, धार्मिक, विज्ञान, पर्यावरण, राजनीति, कला, खेल–जगत, किसी भी क्षैत्र से सम्बधिंत जानकारियॉ व सूचनाऍ सरलता से कम समय में सोशल मीडिया द्वारा उपलब्ध करवाई जाती है। सरल शब्दों में सोशल मीडिया एक इंटरनेट आधारित एप्लिकेशन है जिसकी मदद से लोग एक–दूसरे से जुड़ सकते है। सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले सोशल मीडिया ऐप फेसबुक, इंस्ट्रागाम, ट्विटर, स्नैपचैट, युट्यूब आदि है। जबकि नैतिकता शब्द का अर्थ, ''क्या सही है और क्या गलत है'' के बीच परिभाषित करने की क्षमता इन दिनो सोशल मीडिया का भरपूर उपयोग हो रहा है। बहुत सारे सोशल मीडिया ऐप है जो बहुत बार आमतौर पर सभी प्रकार के आयु समूहो द्वारा उपयोग किये जाते है। आजकल जिस तरह से सोशल मीडिया का इस्तेमाल किया जा रहा है, वह अपने साथ बहुत सारे सकारात्मक या नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव लाता है। यह दूर रहने वाले लोगो के सम्पर्क में रहने का एक तरीका देता है। यह लोगो को मजेदार, रोचक और सूचनात्मक सामग्री साझा करने देता है, लेकिन साथ ही यह नैतिक मूल्य और नैतिकता को भी बहुत प्रभावित कर रहा है।

* सहायक प्रोफेसर एस.एस.जी. पारीक स्नातकोतर शिक्षा महाविद्यालय, जयपुर।

शोध के उद्देश्य

- किशोरवस्था के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सोशल मीडिया से पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- सरकारी तथा निजी विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सोशल मीडिया से पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

- सरकारी तथा निजी विद्यालयो के किशोर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सोशल मीडिया से पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- सरकारी विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सोशल मीडिया से पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- निजी विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सोशल मीडिया से पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध कार्य का परिसीमाकंन

- प्रस्तुत अध्ययन को जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित रखा गया है।
- न्यादर्श के रूप में सरकारी तथा निजी विद्यालयों के 60 विद्यार्थियों को चुना गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सोशल मीडिया से पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

शोध उपकरण व विधि शास्त्र

- दत संकलन हेतु मानकीकृत उपकरण की अनुलब्धता में स्वनिर्मित मूल्य प्रमापनी का प्रयोग किया गया है।
- संकलित दतो का सांख्यिकी मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण के द्वारा विश्लेषण किया गया है।

प्रदतो का वर्गीकरण व विश्लेषण

परिकल्पना सरकारी तथा निजी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सोशल मीडिया से पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु टी–परीक्षण किया गया, जिसके परिणामस्वरूप टी–मान 2.07 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीगत मानकीकृत क्रमशः 2.00 से अधिक पाया गया है। अतः परिकल्पना सरकारी तथा निजी विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सोशल मीडिया से पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है को अस्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना 2 भी अस्वीकृत की गई, क्योंकि गणना द्वारा का मान 2.95 प्राप्त हुआ, जो कि तालिका मे मान से अधिक है, अर्थात सरकारी विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सोशल–मीडिया से पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, को अस्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना 3 भी अस्वीकृत की गई क्योंकि गणना द्वारा ज का मान 4.15 प्राप्त हुआ जो कि तालिका के मान से अधिक है अर्थात निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियो के नैतिक मूल्यों पर सोशल मीडिया से पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, को अस्वीकृत किया जाता है।

शैक्षिक निहितार्थ

- **विद्यार्थियो की दृष्टि से**

वर्तमान समय सूचना प्रौद्योगिकी तकनीकी का समय है। इस समय सोशल मीडिया का हर क्षैत्र में उपयोग बढ़ता जा रहा है आज का विद्यार्थी सोशल मीडिया पर अपने वीडियो, ऑडियो, सूचना के आदान–प्रदान के लिए करता है, विद्यार्थी को बहुत सारी जानकारी तुरन्त मिल जाती है, लेकिन इसके साथ ही उसके नैतिक मूल्य ओर नैतिकता बहुत प्रभावित हुई है।

भावी शोध हेतु सुझाव

- यह अनुसंधान कार्य उच्च माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों के अतिरिक्त स्नातक स्तर के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
- यह अनुसंधान शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर सोशल मीडिया से पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- यह अनुसंधान जयपुर जिले के अतिरिक्त अन्य जिलों के सोशल मीडिया से पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. https:// www.techisasia.com/india 462 million internet users 79 traffic mobile
2. Agarwal Y.P. (1988): Better sampling, sterling publishers Pvt. Ltd. New Dehli, A surey of Research in Education.
3. Barr, A.S. and Scates (1954): The methodology of education research" New York. Nepolten craft inc.
4. Best, J.W.(1983) Research in education Prentics hall ,New Delhi.
5. Blair, G.M.Jones,R.S and Simpson, R.H (1956)Education Longmans research ,New Delhi
6. Jegdish, B.K.(2004):Human values and spiritual values, Om shanty press, Gyanamrit bhawan Abu.

❖◆❖